IUCN World Conservation Congress Hawai'i 2016

अपने द्वीप पृथ्वी के पोषण के लिए

मालामा होनुआ

सितम्बर 2016 में 'हवाय' में हुए आई.यू.सी.एन के विश्व संरक्षण सम्मेलन में सहभागिद्धारा प्रकृति–संस्कृति की सहयात्रा पर किए गए संकल्पों का विवरण–

जिन विवादों / मतभेदों से आज हमारा ग्रह घिर गया है उन चुनौतियों की गम्भीरता की ओर ध्यान देने के लिए प्रकृति–संस्कृति यात्रा के हम सभी सहयात्री सितम्बर 2016 में आई.यू.सी.एन द्धारा आयोजित विश्व संरक्षण सम्मेलन के लिए 'हवाय' के 'होनोलुलु' में एकत्रित हुए।

आभारी हैं – अपने सम्मिलन स्थल 'कामायना' के लोगों के प्रति।

आभारी हैं – 'हवाय' के लोगों में 'अलोहा' की उस उदार भावना के प्रति जिसने उचित समय पर जगह देकर प्रकृति–संस्कृति के अटूट बन्धन के प्रति हमारी समझ को और गहन एवं विस्तृत किया।

आभारी हैं– 'हवाय' संस्कृति के प्रति – जिस की धरती और समुद्रों की देखभाल, जिम्मेदारी और प्रबन्धन की धारणा 'कुलेयाना' आज भी प्रासंगिक है।

सराहना करते हैं– प्रकृति–संस्कृति की सहयात्रा की–जिसने दुनिया भर के महत्वपूर्ण स्थानों के संरक्षण और प्रबन्धन में भिन्न भिन्न पृष्ठभूमि वाले लोगों को विचार विनिमय का अवसर प्रदान किया और प्रकृति–संस्कृति के अन्तःसम्बन्धों को आगे और गहरा करने वाले अभ्यासों को बढाया।

विचार करें– प्रकृति–संस्कृति सहयात्रा के अन्तर्गत प्रस्तुत परिप्रेक्षों की विविधता पर– जिस में कि निरन्तर बनी रहने वाली खेती, खाद्य–सामग्री के प्रभुत्व और शहरी पर्यावरण की खुशहाली सहित विविध सन्दर्भों वाला ऐसा ढॉचा प्रस्तुत किया गया जो यह स्पष्ट करता है कि थल/जल के मोहक सौन्दर्य में प्रकृति–संस्कृति आपस में किस तरह अभेद्य है।

पहचानें– प्रकृति–संस्कृति के दिव्य और पावन आयामों को और सराहें– हमारे धारणा को बल देने वाली संरक्षण की सहयात्रा और दार्शनिकता के संवादों और उनके परिणामों को।

मूल्य समझें– प्रकृति–संस्कृति के परस्पर सद्भावना पूर्ण उन प्रेरणास्पद उदाहरणों का जिन्हें इस सम्मेलन में सांझा किया गया। वे क्षेत्र के आधार पर बने प्रस्तावों, सुप्रशासन ओर नि पक्षता, देशी और स्थानीय लोगों के अधिकारों के प्रति सम्मान की जरुरत को स्वयं करके दिखाते हैं और पारम्परिक संस्थाओं को सुदृढ करते हैं।

पहचानें– हमारी इस गहन चिन्ता को– कि दुनियाभर में संस्कृति और प्रकृति की विविधता और विरासत, को अनेक चुनौतियों से गहरा खतरा हो गया है जिसमें जलवायु–परिवर्तन और संस्कृति–प्रकृति विभाजन का निर्मित होना, उस विशालतर प्रक्रिया का द्योतक है जिसने हमें विनाश के पथ पर ला खडा किया है।

समझें – कि हमारा अपना प्लैनिट आज विवादों से घिरा हुआ है ऐसे में एक ही रास्ता अपनी ओर खींच रहा है कि एकीकृत होकर प्रकृति–संस्कृति के संरक्षण के प्रयासों को सुधारें, सांस्कृतिक विविधता को बढावा दें, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के समकालीन समाजों के हितों की ओर मदद का हाथ बढायें ताकि लम्बी अवधि तक इसे बचाये रखने के लक्ष्यों को बढावा दिया जा सके।

याद करें– युनैस्को, वर्ल्ड हैरिटेज कॉनवेन्शन जैसी विद्यमान अन्तर्राष्टीय सन्धियों के लिए किस हद तक सम्भावनाओं की जॉच /परख की गई होगी जिससे कि वे प्रकृति एवं संस्कृति को साथ लाने के साथ साथ संस्कृति एवं जैविक विविधता से सम्बन्धित कनवेन्शनों, घो णाओं और अन्य अन्तर्राष्टीय दस्तावेजों को एक जगह पर लाकर विश्वस्तरीय मानकों की स्थापना कर पाये।

खुशी है कि देशीय ज्ञान के सहज मूल्यों, स्थानीय क्षेत्र आधारित अध्ययन और ऑन ग्राउण्ड अनुभव की मान्यता बढ रही है।

पहचानें– उस योगदान को जिससे कि प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के रुप में यू.एन. के चिरस्थायी विकासपरक लक्ष्य, पेरिस समझौता , सेनडई की रुपरेखा और हैबिटैट 3 के नये शहरी एजेंडा की उपलब्धि हुई और उस के लिए अन्तः सामर्थ्य को पाने के लिए प्रकृति और संस्कृति के सम्बन्ध को बेहतर बनाने वाली मूलभूत जरुरत को प्राप्त किया गया।

IUCN World Conservation Congress
Hawai'i 2016

इसलिए हम –

आग्रह करते है – सम्बद्ध समुदायों के हितों के लिए नेतृत्व, सहभागिता, लचीलेपन को बढावा देने वाली, उन नवीन कार्य प्रणालियों और पद्धतियों का आह्वान करते हैं जो कि संरक्षण को पूरे भूतल के स्तर तक ले जाने के लिए प्रकृति एवं संस्कृति को एक साथ जोडने में विश्वास रखते हैं।

आग्रह है– ग्लोबल स्तर तक पहुँची हुई जिन अरजन्ट चुनौतियों का आज हम सामना कर रहे हैं उन के लिए यू.न. के चिरस्थायी विकासपरक लक्ष्यों, पेरिस समझौते, सेनडई की रुपरेखा और हैबिटैट के नये शहरी एजेंडा जैसे समाधानों को पाने के लिए हम मिलकर एकीकृत प्रयास को बढावा दें। प्रकृति एवं संस्कृति दोनों क्षेत्रों से आग्रह है कि वे साथ साथ चलें।

जिम्मेदारी उठायें – संरक्षण की इस रुपान्तरित नई पद्धति के और आगे ले जाने के लिए अपने अपने प्रयासों द्वारा –हर तरह के व्यवसायिक प्रशिक्षणों तक पहुँचें, अपने साथियों और सामाजिकों से लगातार संवाद करते रहेंगे और भावी पीढी को अपने साथ लेकर चलेंगे।

अनुरोध है– आइ.यू.सी.एन के 2008 विश्व संरक्षण सम्मेलन में प्रकृति संरक्षण के सन्दर्भ में प्रस्तावित सांस्कृतिक मूल्यों और पद्धतियों को संजोने और समझने के लिए एक नीति को बनायें और अपनायें।

अनुरोध है– इकोमोस से कि प्राकृतिक मूल्यों और प्रचलनों को सांस्कृतिक विरासत से एकरुप करने की दिशा में अपनी गतिविधियों को और आगे बढायें एवं 2017 में भारत की नई दिल्ली में होने वाली जनरल असेम्बली में प्रकृति– संस्कृति सहयात्रा और चल रहे संवाद को जारी रखें।

अनुरोध है– इकोरोम से कि – क्षमता विकास के कार्यों में अपने नेतृत्व को बनायें रखें । संस्कृति और प्रकृति की विरासत एवं सामाजिकों की भूमिका के प्रबन्धन में अन्तःसम्बन्धों पर जोर देने वाले कार्यक्रमों का विकास जारी रखें विशे ाकर वर्ल्ड हैरिटेज लीडरशिप प्रोग्राम को जिसका शुभारम्भ इस आइ.यू.सी.एन के विश्व संरक्षण सम्मेलन में हुआ।

अनुरोध है –इकोमोस, आइ.यू.सी.एन, इकोरोम एवं युनैस्को से कि आज की विराट चुनौतियों का प्रभावकारी रुप से सामना करने के लिए प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के तरीकों और दृ टकोण ाों को बदलने में अपनी सहभागिता के लम्बे इतिहास को और गहरा करें और विस्तार दें।

आह्वान करते हैं– विश्वविद्यालयी संस्थाओं का– कि वे ऐसे अन्तःवि ायी शोधकार्य और शैक्षिक कार्यक्रम बनायें जिसमें संरक्षण की शैली को बदलने एवं पुनः कल्पित करने की प्रेरणा द्वारा प्रकृति– संस्कृति के अटूट सम्बन्ध पर जोर दिया जाये और सरल भाषा में उसे अधिक से अधिक श्रोताओं तक पहुंचाया जाय।

आमंत्रित करते हैं– दुनिया भर के उन लोगों को जो प्रकृति–संस्कृति के संरक्षण का काम कर रहे हैं, कि हमारे इस संकल्प से जुडें और इन सिद्धान्तों को अपने अपने समाज में लागू करें।

नोट– प्रकृति–संस्कृति की इस सहयात्राका समन्वय आइ.यू.सी.एन और इकोमोस के संयुक्त नियोजन द्वारा हो रहा हैं जिसमें यू.एस.के इकोमोस और सहभागियों के एक विशाल समूहका सहयोग प्राप्त हैं।

The translation in Hindi was undertaken by a retired Hindi language professor, Dr.Veena Khanna (Delhi) and Cultural Landscape Expert, Nupur Prothi Khanna (Stockholm).